032

DPL - 01

December - Examination 2015

DPL-01 Examination

प्रमुख प्राकृत भाषायें एवं प्राकृत साहित्य की विविध विधायें

Paper - DPL - 01

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

नोट :–

1) यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों 'अ', खण्ड 'ब' और खण्ड–स में विभाजित है। खण्ड अ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।

(खण्ड – अ) $10 \times 2 = 20$

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है। सभी की उत्तर शब्द सीमा अधिकतम 30 शब्द होगी। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1) (i) कुवलमालाकहा की रचना कब एवं कहाँ की गई। इसकी विधा का नाम लिखिए।

(ii) पैशाची प्राकृत में लिखित प्रमुख ग्रन्थ का नाम लिखकर उसके रचनाकार एवं रचनाकाल पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

(iii) सट्टक किसे कहते हैं? परिभाषा लिखकर उसकी कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

(iv) वसुदेवहिण्डी कृतिका लेखनकाल एवं रचनाकार का उल्लेख कीजिए।

(v) अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा की कोई दो विशेषताएँ एवं कोई दो ग्रन्थों के नाम लिखे।

(vi) शौरसेनी प्राकृत की प्रमुख प्रवृत्ति लिखकर किसी एक शौरसेनी ग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(vii) सम्मसदुत्तं का वर्ण–विषय एवं रचनाकार का उल्लेख कीजिए।

(viii) आगम साहित्य के निर्युक्तकार कौन है? उन्होंने कितने ग्रन्थों पर निर्युक्तियाँ लिखी?

(ix) अंगविज्जा में कुल अध्याय संख्या कितनी है? इसके रचनाकाल एवं विषयवस्तु का निर्देश कीजिए।

(x) पाइयलच्छीनाममाला के लेखक, समय एवं भाषा का नामोल्लेख कीजिए।

(खण्ड – ब) $4 \times 10 = 40$

नोट : निम्नलिखित 8 प्रश्नों में से कोई 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

2) प्राकृतभाषा का सामान्य परिचय देते हुए उसके भेद–प्रभेद पर प्रकाश डालिए।

3) गाथासप्तशती के महत्त्व को, लौकिक एवं सामाजिक चित्रण की दृष्टि से, प्रतिपादित कीजिए।

4) कंसवहो ग्रन्थ खण्डकाव्य की परम्परा का प्रमुख ग्रन्थ है। इसे सिद्ध कीजिए।

5) संस्कृत नाटकों में प्राकृत भाषा का प्रयोग क्यों किया जाता है? स्पष्ट

करते हुए किसी एक नाटक का दृष्टान्त लिखिए।

6) जैन रामायण पउमचरियं के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

7) शौरसेनी प्राकृत भाषा का परिचय एवं आचार्य कुन्दकुन्द के किसी ग्रन्थ का वैशिष्ट्य लिखिए।

8) महाराष्ट्री प्राकृत भाषा के संज्ञा एवं क्रिया रूपों को समझाइये।

9) लीलावई अथवा कुवलयमाला कहा की सामान्य समीक्षात्मक विवेचना कीजिए।

(खण्ड – स) 2 x 20 = 40

निर्देश : निम्नलिखित 4 प्रश्नों में से कोई दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

10) प्राकृत काव्यसाहित्य की परम्परा एवं विविध प्रकार के प्राकृत काव्यों का संक्षिप्त परिचय दिजिए।

11) सम्मइसुत्रं ग्रन्थ का वैशिष्ट्ट प्रतिपादित कर जैन नय सिद्धान्त की समीक्षक कीजिए।

12) ''कर्पूरमंजरी एक सट्टक ग्रन्थ है'' सिद्ध करते हुए उसकी समीक्षा कीजिए

13) निम्नांकित ग्रन्थों/प्राकृतभाषा का परिचय देकर उसके वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

(i) समराइच्च कहा

(ii) कोशकाव्य एवं पाइयसद्दमहण्णव

(iii) अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा एवं साहित्य